शिक्षकों के पठनार्थ

(प्रस्तोता)
प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
बरेली (उत्तर प्रदेश)

शिक्षकों के पठनार्थ : अनुक्रमणिका

1. उपयोगी शिक्षा सूत्र
2. अनजान लिपि का अहसास
3. पाठ पढ़ाने का क्रम
4. हिंदी पठन में क्रमवार चुनौतियाँ
5. A thought about first step
6. अंग्रेज़ी प्रार्थना आदि में विशेष ध्यातव्य बातें
7. एक वाक्य का असर
8. बात छोटी लेकिन उपेक्षणीय नहीं
9. पहले माहौल-रूपी कप सीधा करें
10. इंसान की कीमत 0 से बढ़कर
11. एक अनुभूति
12. उपाय एक : लाभ अनेक
13. 'भूल' 'सुधार' !
14. पढ़ाई से दूर हो रहे बच्चे के संबंध में कुछ उपाय
15. विषय-ज्ञान मालगाड़ी...
16. शिक्षा : हमारी दृष्टि और स्थिति कहाँ है?
17. प्रेरक शिक्षा-वाक्य
18. प्रतियोगिता की सार्थकता कैसे हो?
19. संस्कार-बीज
20. ज्ञान-शिक्षा विषयक एक दृष्टान्त
21. फ़िनलैंड की शिक्षा-पद्धति
22. श्री सोनम वांगचुक के अनमोल अनुभव
23. महत्त्वपूर्ण शिक्षा : बच्चों की सुरक्षा
24. दो बहु-उपयोगी जानकारियाँ
25. 2 महत्त्वपूर्ण शोध
26. 5 महत्त्वपूर्ण सूत्र
27. हिन्दी के अल्पज्ञात महत्त्वपूर्ण तथ्य
28. क्या आप जानते हैं?
29. Indirect Abbreviations
30. संख्या-आधारित मुहावरे/वाक्यांश
31. एक वर्ण का कमाल
32. अनुस्वार और पंचम वर्ण संबंधी नियम
33. हिंदी कहावतें = English Proverbs
34. 20 Positive Proverbs
35. स्थानीय इतिहास का संकलन हो
36. अहसासों का प्रेरणा-कुंज
37. झकझोरने वाली विचार-तरंगें
38. Useful Full-forms
39. आधारशिला : फाउंडेशन लर्निंग शिविर
40. शिक्षण-संग्रह : व्यक्तित्व विकास की कार्ययोजना
41. शिक्षण योजना : बच्चों का पूछताछ केन्द्र
42. शिक्षण योजना : हौसला

【उपयोगी शिक्षा सूत्र : भाग १】

* सर्वश्रेष्ठ शिक्षक कक्षा १ और २ में पढ़ाएं।

* U-shape में बैठाना सर्वोत्तम है।

* छोटे बच्चों को floor-mat पर बैठाएँ और बड़े बच्चों को desk-bench पर।

* विशेष ध्यान रखें कि बच्चे ध्यान से देखें, सिर्फ बोले नहीं, क्योंकि आँखों से 'सुनने' का विशेष महत्त्व है।

* बच्चों को अनुशासित रखने के लिए भले ही दण्ड दें लेकिन उन्हें इतना प्यार भी दें कि उस दंड को उनका हृदय स्वीकार कर ले, जैसे माँ से।

* बच्चों के पढ़ने-पढ़ाने के समूह बनायें, उनकी इच्छा से (peer-learning), और नियमित फीडबैक लेकर उत्साहवर्धन भी करते रहें।

* पारंपरिक पढ़ाई ठोस होती है, किन्तु थका देती है, खेल वाली पढ़ाई सरस होती है लेकिन time-consuming होती है, अतः दोनों का ही आवश्यकतानुसार संतुलित प्रयोग करें।

* अनुपस्थित बच्चों की लापरवाही की स्थिति में उनके पीठ पीछे उनके लिए सभी बच्चों के सामने कठोर शब्द बोलें ताकि अन्य बच्चे लापरवाह अनुपस्थिति में संकोच करें।

* ऐसे मुक़ाबले अवश्य कराएँ जिनमें कक्षा के सबसे कमजोर बच्चे को भी जीतने का अवसर मिले।

* पुस्तकालय और विशेषकर खेल सामग्री बच्चों को आकर्षित करने में बहुत सहायक है।

* बच्चों को इस प्रकार प्रेरित करें कि वे शिक्षक की अनुपस्थिति में भी स्वाध्याय में प्रवृत्त हों।

* पढ़ाई को गीतों में ढालकर सरस बनायें लेकिन रटन-प्रवृत्ति से बचाते हुए।

* पढ़ाई का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है बच्चों को पढ़ने को प्रेरित करते रहना; उनसे बातें करें, उन्हें मिसालें दें, प्रेरक videos/photos दिखायें।

* हमारा सौभाग्य है कि दान के सर्वोत्तम सुपात्रों के मध्य हमें काम करने का मौका मिला है, ऐसे सुपात्र जो २-२ रुपये की चीज़ से खुश होकर ईश्वरीय मुस्कराहट बिखेर देते हैं, ऐसी मज़ेदार पूजा के स्वर्णिम अवसर को जमकर भुनाएँ।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

मिशन शिक्षण संवाद

अनजान लिपि का अहसास

(Net पर इस चित्र को देखकर हुआ अहसास)

इस लिपि से अनजान हम सभी बेसिक शिक्षकों को यह चित्र सदा स्मरण रखना चाहिए जो अनुभव कराता है कि अनजान अक्षरों को सीखना कितनी श्रमसाध्य और समयसाध्य प्रक्रिया है और नन्हें बच्चों के मनोमस्तिष्क को कैसा प्रतीत होता होगा।

(विचारक: प्रशान्त अग्रवाल, प्रा.वि. डहिया, बरेली)

मिशन शिक्षण संवाद

पाठ पढ़ाने का क्रम

पढ़ाये जाने वाले पाठ के सन्दर्भ में मैं निम्नांकित स्तरों पर कार्य करने का प्रयास करता हूँ :

1. **पढ़ाने से पहले शिक्षक द्वारा पाठ को स्वयं खूब अच्छी तरह हृदयंगम कर लेना (एक नज़र वाले चार्ट की सहायता से)**

2. **बच्चों को बातचीत करते, कहानी सुनाते, अनुभव बताते-सुनते, पाठ सम्बन्धी चित्र-वीडियो दिखाकर पूरे पाठ को पढ़ाना (किताब की भूमिका नगण्य)**

3. **सुने हुए के आधार पर छोटी सी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (कौन सबसे एकाग्र श्रोता)**

4. **श्यामपट्ट पर संक्षेप में समस्त तथ्यात्मक सामग्री को वस्तुनिष्ठ स्वरुप में 'एक नज़र में' (लम्बी-चौड़ी भाषा नहीं)**

5. **बच्चों द्वारा उसका लेखन**

6. **समय-समय पर उसका मौखिक परीक्षण (प्रतियोगिता स्वरुप में)**

(निश्चित रूप से अनेक सुधार अपेक्षित होंगे, अतः विचार आमंत्रित हैं)

【साथ ही यह भी इच्छा है कि प्रत्येक पाठ के श्यामपट्ट कार्य (बिंदु 4) के यदि pdfs बन जाएँ तो शिक्षकों-छात्रों को लाभ हो सकता है।】

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

हिंदी पठन में क्रमवार चुनौतियाँ

1. वर्ण की पहचान।

2. मात्रा की पहचान।

3. वर्ण और मात्रा मिलाकर पढ़ना।

(चुनौती : 'की' पढ़ने में बच्चे ने 'क' पहचाना, 'ई की मात्रा' पहचानी लेकिन 'की' नहीं बोल सका)

4. पूरा शब्द पढ़ना।

(चुनौती : बच्चे ने 'राजू' में 'रा' पढ़ लिया, 'जू' भी पढ़ लिया, लेकिन 'जू' पढ़ते-पढ़ते, स्वयं पढ़े हुए 'रा' की स्मृति चली गयी)

5. सभी शब्द धारण करके वाक्यार्थ समझना।

(चुनौती : सब शब्द पढ़े, लेकिन अंतिम शब्द तक पहुँचते-पहुँचते पहले पढ़े हुए शब्दों को धारण नहीं रख सका)

【 क्रमांक 3-5 का एकमात्र समाधान : अभ्यास 】

(अनुभवकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

A thought about first step

The first and main thing is to establish teacher-student repo. And to establish it, teacher should introduce English language as 'शीतल हवा का झोंका' in the form of :

1. Singing rhyme (without giving emphasis on meaning)...

2. Simple commands (with ease on face)

3. PRE (print rich environment) with attractive pictures.

4. Rectifying the error of students with gentle-calm gesture.

And once we get success to boost the confidence and morale of students, the remaining task will take its own course very easily because crossing the hurdle of 'hesitation' is the topmost achievement in language learning.

(Thinker : Prashant Agarwal, P.S. Dahiya, Bareilly, U.P.)

अंग्रेज़ी प्रार्थना आदि में विशेष ध्यातव्य बातें

अक्सर ऐसी सामग्री जो अल्पपरिचित भाषा (जैसे अंग्रेज़ी) में होती है या जिसमें क्लिष्ट शब्दों की बहुतायत होती है (या अन्य प्रकार की सामग्री भी), जब बच्चों के बीच उसका सामूहिक वाचन/गायन कराया जाता है तो प्रायः कुछ त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं जिन पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है :-

1. प्रार्थना की महत्ता, उसके लाभ, एकाग्रचित्त से न करने पर होने वाली हानियों आदि से बच्चों को परिचित न कराना।
2. वाचन से पूर्व बच्चों को उसका भावार्थ न समझाया जाना।
3. कुछ ही मुखर बच्चों की बुलंद आवाज़ के कारण अन्य बच्चों का उदासीन बन जाना या अपने प्रयासों में न्यूनता ले आना।
4. प्रतिज्ञा आदि सामग्री का ज़रूरत से अधिक तीव्र वाचन
5. बच्चों में मंद स्वर और तीव्र स्वर के बीच 'मर्यादित स्वर' की अवधारणा स्पष्ट न होना।
6. आंखें बंद करने पर वहाँ भी जोर देना, जहाँ अभी बच्चे को आँखें खुली रखकर भावानुरूप इशारों सहित गायन कराना अधिक रुचिकर, आवश्यक और प्रभावी हो सकता है।
7. सरस लयात्मक माधुर्य पर ज़रूरत से कम ध्यान देना।
8. पंक्ति के अंतिम शब्दों का उपेक्षापूर्ण गायन/वाचन।
9. प्रार्थना पंक्ति-दर-पंक्ति कराये जाने की स्थिति में समूह द्वारा उच्चरित अंतिम शब्द की प्रतिध्वनि (echo) समाप्त होने से पूर्व ही नयी पंक्ति का आरंभ कर देना जिससे नयी पंक्ति का प्रथम शब्द अस्पष्ट ही रह जाता है।
10. आरम्भिक अंतराल, शब्द-मध्य, वाक्य-मध्य अंतरालों का कम होना।
    (किसी विद्वान ने कहा भी है कि 'कविता शब्दों में नहीं, उसके मध्य के अंतरालों में है', आखिर बोले गये शब्दों को समझने के अलावा महसूस करने का समय भी तो दीजिये, भले ही वह सेकंड से भी कम हो। तूफान नहीं बयार हो)
11. क्रमशः मंद-स्वर में समाप्ति तक लाने की बजाय एकाएक समाप्ति।
12. प्रार्थना समाप्त होते ही एकाएक आँखें खोलना (जबकि तन्मयता की स्थिति में समाप्ति के कुछ देर बाद तक उसका प्रभाव महसूस करना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है)
13. अन्य बिंदु जो सुधी साथियों की दृष्टि में आयें।

प्रार्थना का प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं दिखता किन्तु जिस प्रकार स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक प्रभावी होता है, ठीक उसी प्रकार बाल-कोमल-चित्त पर प्रार्थना का सूक्ष्म प्रभाव भी दूरगामी स्थायी महत्त्व का होता है। यदि उसे सही से प्रार्थना करना आ गयी तो समझिए हमने उसके सम्पूर्ण जीवन को साधने के लिए एक अनमोल निधि प्रदान कर दी । (विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

(एक वाक्य का असर)

विश्व की bestsellers पुस्तकों में से एक है 'तोत्तोचान', जिसमें जापान में १९४५ ईस्वी के आसपास मिस्टर कोबायाशी द्वारा संचालित विचित्र विद्यालय की रोमांचक और मार्मिक दास्तान है।

मिशन शिक्षण संवाद

उस पूरी पुस्तक का सार मुझे वह कथन लगता है जो मिस्टर कोबायाशी एक छोटी सी बच्ची में आत्मविश्वास फूँकने के लिए बार-बार उससे कहते हैं, "तोत्तोचान, तुम सच में एक अच्छी बच्ची हो।"

और बड़ी होकर वह बच्ची (किताब की लेखिका) भी मानती है कि इस एक वाक्य ने उसके जीवन की दिशा बदल दी।

बात छोटी लेकिन उपेक्षणीय नहीं

कहीं एक बड़ी मनोवैज्ञानिक लघुकथा पढ़ी थी, जो प्रत्येक अभिभावक, प्रत्येक शिक्षक को न केवल पढ़नी चाहिए बल्कि रोजमर्रा की घटनाओं में अमल की दृष्टि से उस पर चिंतन भी करना चाहिए।

एक महिला ने अपने पति और छोटे बच्चे को भोजन परोसा और भोजन के उपरान्त दोनों को एक-एक लड्डू दिया; पति को पूरा लड्डू और बेटे को आधा लड्डू। बच्चा मचल गया और जिद करने लगा कि मुझे भी पूरा लड्डू दो। माँ ने बहुत समझाया कि देखो, पिताजी बड़े हैं इसलिये उनका लड्डू पूरा है और तुम छोटे हो इसलिये तुम्हारा लड्डू आधा है। लेकिन बच्चा नहीं माना और रोने लगा।

तब माँ ने कुछ सोचा। वह बच्चे का आधा लड्डू लेकर रसोईघर में गयी और उसी आधे लड्डू को हाथ से पूरा गोल बना दिया। बाहर आकर उसने जब वह लड्डू बच्चे को दिया तो बच्चे ने बड़ी ख़ुशी से वह छोटा लेकिन पूरा लड्डू खा लिया।

बात यह, कि "पिताजी पूरे, मैं आधा", यह बात बच्चे को हजम नहीं हुई। हाँ, "पिताजी बड़े और मैं छोटा" यह बात बच्चे को न्यायपरक लगी। बच्चा छोटा है लेकिन अपने आप में पूरा है और यह भाव वह अनुभव भी करता है, बस अनेक बार वह अपनी भावनाओं को शब्द नहीं दे पाता। लेकिन होशियार माँ (वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षक) उसकी अनकही बात को समझ जाती है।

उसकी छोटी-छोटी समस्याएँ (चाहे वह पेंसिल चुरने की हो, या रबड़ खोने की) हमारे लिये छोटी भले ही हों लेकिन आधी-उपेक्षणीय कतई नहीं क्योंकि उसके लिये वह समस्या उतनी ही बड़ी-पूरी है जैसे कि हमारे लिए हजारों की चोरी।

और सबसे बड़ी बात, बच्चों की छोटी समस्याओं की उपेक्षा करने से एक माँ (विद्यालय में शिक्षक) उसका बेहद कीमती भरोसा भी खो सकती है। और बच्चे की समस्या को गंभीरता से लेकर हम उसका कीमती भरोसा अर्जित भी कर सकते हैं।

(विचार/प्रस्तुति: प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

पहले माहौल-रूपी कप सीधा करें

(BRC फतेहगंज पश्चिमी, बरेली में हुए Learning Outcomes प्रशिक्षण के दौरान श्री अमर द्विवेदी जी द्वारा दिया गया एक बेहद प्रभावी दृष्टांत)

"यदि कोई कप उल्टा रखा है तो क्या आप उसमें पानी भर सकते हैं?"

नहीं, पानी भरने के लिए पहले कप को सीधा करना होगा।

ठीक इसी प्रकार यदि बच्चों की मनःस्थिति रूपी कप उल्टा रखा है, तो आप ज्ञान की बरसात करके चले आएंगे लेकिन कप के अंदर कुछ नहीं जायेगा।

अतः पढ़ाने से पहले वह माहौल बनायें जिसमें बच्चे आपके ज्ञान को ग्रहण कर सकें।

(प्रस्तोता: प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

【 इंसान की कीमत 0 से बढ़कर 】

(रूस में पढ़ रहा एक विद्यार्थी लिखता है)

रूस में ज़्यादातर परीक्षाओं में अधिकतम अंक 5 होते हैं। यदि कोई विद्यार्थी बिना किसी प्रश्न का उत्तर दिये कोरी उत्तरपुस्तिका जमा कर दे, तो उसे 5 में से 2 अंक मिलते हैं।

मॉस्को के विश्वविद्यालय के अपने शुरुआती दिनों में, मैं इस व्यवस्था को नहीं समझ पाया और चकित हुआ; मैंने डॉ. थिओडोर मेद्रेव से पूछा, "क्या यह उचित है कि जिस विद्यार्थी ने कोई उत्तर नहीं दिया, उसे 5 में से 2 अंक दिये जायें? 0 क्यों न दिया जाये?"

उन्होंने उत्तर दिया, **"हम किसी इंसान को 0 कैसे दे सकते हैं?**

हम उसे 0 कैसे दे सकते हैं, जो सभी lectures को attend करने के लिए रोज सुबह 7 बजे तैयार रहता था?

हम उसे 0 कैसे दे सकते हैं, जो इतनी ठंड में उठा, public transport का प्रयोग करके सही समय पर परीक्षा देने उपस्थित हुआ और प्रश्नों को हल करने की कोशिश की?

हम उसे उन रातों के लिए 0 कैसे दे सकते हैं, जिनमें वह पढ़ने के लिए जागा, पेन और नोटबुक्स खरीदने में अपना धन खर्च किया और पढ़ाई के लिए एक कंप्यूटर खरीदा?

हम उसे 0 कैसे दे सकते हैं, जबकि उसने पढ़ाई के लिए अपनी जीवन-शैली को बदला?

इसलिए, मेरे बच्चे, हम उसे सिर्फ इसलिए 0 नहीं दे सकते कि वह प्रश्न का उत्तर नहीं जानता। हम इस बात का सम्मान करने की एक कोशिश करते हैं कि वह एक इंसान है, उसके पास एक दिमाग है और उसने कोशिश की।

क्योंकि जो result हम उसे देते हैं, वह सिर्फ परीक्षा प्रश्नपत्र के प्रश्नों के लिए नहीं है, बल्कि यह इस तथ्य के प्रति प्रशंसा और सम्मान भी है कि वह एक इंसान है जो कुछ अंक deserve करता है।"

वास्तव में, मैं रो पड़ा और समझ नहीं पाया कि किस तरह response दूँ।

वहाँ मैंने एक मनुष्य होने के नाते अपनी कीमत समझी।

दरअसल 0 विद्यार्थियों की प्रेरणा को घटा सकता है, जल्दी ही उन्हें बर्बाद कर सकता है और उनमें अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाही को जन्म देता है। एक बार अगर ग्रेडबुक में 0 चढ़ गया, तब वो उस विषय की परवाह करना छोड़ देता है और यह धारणा बना सकता है कि अब इसमें उसके लिए कुछ नहीं बचा। (अनुवादक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

मिशन शिक्षण संवाद

(एक अनुभूति)

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि सबके प्रति सदैव निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और पर्याप्त मधुर व्यवहार करने के बावजूद मेरे अंतर्मन में भी कहीं न कहीं धर्म, लिंग आदि पर आधारित कुछ पूर्वाग्रह रहते हैं।

लेकिन पिछले दिनों, जबसे कक्षा एक और दो को पढ़ाना शुरू किया है, एक मधुर अनुभव जो कर रहा हूँ, आपसे साझा करना चाहता हूँ।

मेरी कक्षा के बच्चों की मासूमियत ने मुझे महसूस कराया कि जो भी व्यक्ति धर्म/मज़हब के आधार पर विद्वेष की हल्की सी गाँठ भी मन में रखता हो, उसे ज़िन्दगी में कम से कम एक बार इस उम्र के अन्य-धर्मी मासूमों के साथ कम से कम कुछ महीने ज़रूर गुज़ारने चाहिए और तब उसे पता लगेगा कि धर्म के असली रास्ते से हम 'समझदार' होने के बाद ही भटकते हैं।

असली धर्म तो इन मासूमों के पवित्र आचरण में है, जो 'अन्य धर्म' के प्रति सापेक्ष होकर नहीं, अपनी निरपेक्ष स्वतंत्र सत्ता में सहज होकर विचर रहा है।

(प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

मिशन शिक्षण संवाद

उपाय एक : लाभ अनेक

(अनेक शिक्षक संभवतः ऐसा करते भी होंगे)

हमारे प्राथमिक विद्यालयों में प्रायः एक ही परिवार के अनेक बच्चे पढ़ते हैं, जो आमतौर पर एक-दूसरे को भैया-जीजी न कहकर नाम लेकर पुकारते हैं। ऐसे में यदि हम **छोटों द्वारा बड़ों को भैया-जीजी कहलाने की आदत** डलवायें, तो इसके अनेक लाभ मिलेंगे :-

1. बच्चों में अच्छा संस्कार आयेगा।
2. जिस बड़े बच्चे से भैया-जीजी कहा जायेगा, उसमें जिम्मेदारी की थोड़ी सी भावना बढ़ेगी।
3. उम्र का लिहाज रहने से लड़ाई की प्रवृत्ति कम होगी, रिश्तों में मजबूती आयेगी।
4. वह बड़ा बच्चा सम्मान महसूस होने से आपके प्रति भी अधिक आदर-भाव रखेगा और आज्ञाकारी बनेगा।
5. गाँव में इस सुशिक्षित संस्कृति का शनैः-शनैः विस्तार होगा।
6. ग्रामीणों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

उक्त के अलावा, हम भी जब छोटे बच्चे से उसके बड़े भाई-बहिन के बारे में बात करें, तो बड़े को भैया-जीजी कहकर ही इंगित करें।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

'भूल' 'सुधार' (!)

पिछले दो वर्षों से मैंने अपने विद्यार्थियों से बड़ों को 'तुम' की बजाय 'आप' कहने पर कोई जोर नहीं दिया क्योंकि :

1. मुझे बच्चों के द्वारा अधिकारपूर्वक कहा गया 'तुम' सुनना अच्छा लगता था। 'आप' में एक दूरी का अहसास होता था/होता है।

2. और मैंने तर्क गढ़ लिया था कि अपनेपन से कहा गया 'तुम' कोई अशिष्टता नहीं है।

लेकिन अब पिछले लगभग डेढ़ महीने से मैंने इस आदत को बदलने पर विशेष जोर देना शुरू कर दिया है क्योंकि :

1. 'तुम' सुनना अच्छा लगता है, सिर्फ इस वजह से इसको प्रश्रय देना स्वार्थ है।

2. आज का बच्चा जब कल बड़ा होकर शहरी समाज के सान्निध्य में आयेगा तो लोग उसके 'तुम' को अपनेपन की नज़र से नहीं, 'गंवारपन' या 'कम पढ़े लिखे' की दृष्टि से देखेंगे और इसका ज़िम्मेदार मैं होऊँगा।

पता नहीं, मैं पहले सही था या अब सही हूँ ?

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

पढ़ाई से दूर हो रहे बच्चे के संबंध में 'कुछ उपाय'

(4 महीने के लिए विद्यालय छोड़कर माता-पिता के साथ ईंट भट्टे पर काम को जा रहे एक बच्चे के सम्बन्ध में शिक्षक को सलाह)

स्थिति निश्चित ही शोचनीय है, जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं, फिर भी तात्कालिक समाधान हेतु कुछ सुझाव

1. **बच्चे से (यदि संभव हो, तो) बीच-बीच में पिता के फोन पर बात करते रहियेगा और विद्यालयी साथियों से भी कराइयेगा।**

2. **हालांकि बच्चा श्रम-पूर्ण कार्य से प्रतिदिन बहुत थक जाएगा, फिर भी उससे कहें कि वह, भले ही 5 मिनट की औपचारिकता निभाये, लेकिन नित्य थोड़ा सा कुछ भी पढ़ने का नियम बना ले (शिक्षा की बनी हुई चेन की एक छोटी सी कड़ी समझकर...)**

3. **दिन में किसी भी समय विद्यालय में गायी जाने वाली प्रार्थना भगवान के सामने अवश्य दोहराये (विद्यालयी स्मृति का छोर नहीं टूटेगा)**

4. **(उसके लौटने पर) परिश्रम करते समय हुए जीवन के अनुभवों को उसके लौटने पर सब विद्यार्थियों से साझा करायें।**

व्यवस्था के पाटों में पिसता बचपन

इतना दु:ख क्यों बनाया भगवन!!

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

विषय-ज्ञान मालगाड़ी के डिब्बों में भरा महत्त्वपूर्ण माल है तो संस्कार और प्रेरणा उस गाड़ी को सही दिशा में ले जाने वाला इंजन है।

(प्रशान्त)

शिक्षा : हमारी दृष्टि और स्थिति कहाँ है?

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

बोध संबंधी ज्ञान-दान

^

आत्मखोज (बोध)

^

दैवी सम्पदा अर्जन (गुण)

^

नवीन भौतिक खोज/आविष्कार

^

नौकरी/व्यवसाय द्वारा जीवनयापन

^

शिक्षा (वैषयिक ज्ञान)

^

साक्षरता

महत्त्वपूर्ण बात : यह श्रेष्ठता-क्रम है, प्राप्ति-क्रम नहीं।

मिशन संवाद
प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

प्रेरक शिक्षा-वाक्य

शिक्षा का अर्थ बाल्टी भरना नहीं, बल्कि एक आग प्रज्वलित करना है।

(William Butler Yeats)

महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि आपने विद्यार्थी में क्या उड़ेला है, महत्त्वपूर्ण यह है कि आपने उसमें क्या रोपा है। (Linda Conway)

बच्चे जाते वहाँ हैं, जहाँ उल्लास हो, लेकिन ठहरते वहाँ हैं, जहाँ प्यार हो। (Zig Ziglar)

एक शिक्षक जो कि अपने विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित किये बिना सिखाने का प्रयास करता है, वह वास्तव में ठंडे लोहे पर हथौड़ा चलाता है। (Horace Mann)

एक हजार साल बाद यह मायने नहीं रखेगा कि मैं कैसी कार चलाता था, या मैं कैसे घर में रहता था, या बैंक में मेरा कितना पैसा था, बल्कि महत्त्व की बात यह होगी कि यह संसार एक बेहतर स्थान हो सका क्योंकि मैं एक बच्चे के जीवन में परिवर्तन लाया था। (Forest Witcraft)

एक औसत दर्जे का शिक्षक बताता है,
एक अच्छा शिक्षक समझाता है,
एक बेहतर शिक्षक कर के दिखाता है,
और एक महान शिक्षक प्रेरित करता है। (William Arthur Ward)

मुझे बताइए, मैं भूल जाता हूँ,
मुझे दिखाइए, मैं याद रखता हूँ,
मुझे शामिल कीजिये, मैं सीख जाता हूँ। (Xun Kuang / Benjamin Franklin)

दो तरह के शिक्षक होते हैं :
एक वो जो आपको इतना भयभीत कर देते हैं कि आप हिल न सकें,
और दूसरे वो जो आपको पीछे से थोड़ा सा थपथपा देते हैं, और आप आसमान छू लेते हैं।

(Unknown)

बच्चे यह याद नहीं रखते कि आपने उन्हें क्या पढ़ाने का प्रयास किया, वे याद रखते हैं कि आप क्या हैं। (Jim Henson)

शिक्षक की सर्वोत्तम कला है : रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में आनन्द जगाना।

(Albert Einstein)

(संकलनकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

प्रतियोगिता की सार्थकता कैसे हो?

अभी हमारे विद्यालय का एक छात्र सोहिल, जो ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में 100 मीटर दौड़ में प्रथम आया, जनपद स्तर पर पाँचवें स्थान पर रहा। अगले दिन कक्षा में एक बहुत अच्छा छात्र किसी बात पर बोला कि "सोहिल तो हार गया।"

तब मैंने कहा कि तुम तो बहुत बार गाते हो कि "कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती", फिर आज सोहिल को हारा हुआ कैसे बता रहे हो। वास्तव में तो, भरपूर कोशिश करने वाला हर प्रतिभागी जीतता है।

(फिर चिंतन आगे चला)

क्या ज़रूरी है कि प्रतिभा प्रदर्शन में प्रतियोगिता ही करायी जाये? क्योंकि समाज की मानसिकता (जो हमारे मनोविज्ञान को भी प्रभावित करती है) के अनुसार तो प्रतियोगिता के अंत में सिर्फ प्रथम आने वाला या पुरस्कार पाने वाला ही खुश रहता है। मायूसी ज़्यादा प्रतिभागियों में फैलती है।

क्या प्रतिभा प्रदर्शन का ऐसा format नहीं हो सकता, जिसमें मेहनत और जज़्बे से प्रतिभाग करने वाला हर प्रतिभागी विजयी मुस्कान लेकर निकले? अर्थात विजेता का निर्धारण victory point तक पहुँचने से नहीं, उस रास्ते को नापने में लगी शिद्दत से हो।

क्योंकि इस दुनिया में जब सभी लोगों की race के starting points ही समान नहीं हैं तो victory point समान रखना भी सही नहीं है।

कोई 2 से चलकर 7 तक पहुँच रहा है
कोई 6 से चलकर 10 तक पहुँच रहा है
कोई 11 से चलकर 20 तक पहुँच रहा है

इन्होंने यह दूरी जीवन की किन परिस्थितियों में नापी, इसका निर्धारण करना क्या आसान है?

हो सकता है, फर्क का कारण जन्मजात प्रतिभा, पारिवारिक और सामाजिक विषमताएँ ही हों और लगन, शिद्दत और मेहनत की दृष्टि से सभी समान हों, और सभी विजेता कहलाने योग्य हों, क्योंकि फर्क पैदा करने वाले उक्त factors प्रायः अपने हाथ में नहीं होते।

अंततः मुझे लगता है कि प्रतियोगिता की शैली में बदलाव मनोविज्ञान की माँग है और शैली ऐसी हो जिसमें अपनी ओर से भरपूर प्रयास करने वाले हर प्रतिभागी का हृदय अंत में भी प्रफुल्लित ही रहे, और वह प्रतियोगिता के दौरान भी number game का तनाव न लेकर, उन क्षणों का भी आनंद ले।

आखिर असली आनंद सिर्फ मंज़िल पर थोड़े ही है, रास्ते भी तो गुलज़ार रहें।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र., 5.12.2018)

संस्कार-बीज

(एक रोचक और दूरगामी महत्त्व का विचार)

कहानी, फ़िल्में वे विधायें हैं जिनका बालमन पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है। इस बात का हम सकारात्मक लाभ उठा सकते हैं। हम बच्चों को ऐसी फिल्में, फ़िल्मी दृश्य, फ़िल्मी गीत, animations दिखा-सुना-बता सकते हैं जिनमें जीवन-मूल्यों से जुड़ा कोई मर्मभेदी तत्त्व हो और उस सन्देश को अपने शब्दों द्वारा वर्तमान परिस्थितियों से जोड़कर अधिक प्रभावी भी बना सकते हैं। 'असली' नायक (hero) की छवि बालमन में निर्मित कर सकते हैं।

कुछ फ़िल्में, जिन्होंने पूर्णतः या अपने किसी विशेष अंश से मुझे अपील किया :-

दो आँखें बारह हाथ (खुद को दाँव पर लगाकर बुरे लोगों को सुधारना)

नया दौर (गाँव की भलाई के लिए अकेले जुटना, बाद में सबका साथ आना 'साथी हाथ बढ़ाना')

लगान (गाँव की इज्ज़त के लिए जात-पाँत भूलकर एक होना, लगन के बल पर असंभव को संभव बनाना)

इंद्र-द टाइगर (गाँव की भलाई के लिए राजा का रंक बनना और दिलों पर राज करना)

लिंगा (गाँव के भले के लिए सर्वत्याग, यहाँ तक कि झूठा कलंक भी सहना और सब कुछ हँसते-हँसते)

चक दे इंडिया (मेरा-तेरा का अहंकार छोड़कर टीम भावना से देश का भला करने का जुनून)

मैं आज़ाद हूँ (जनता का भरोसा निभाने हेतु नाटकबाज का नायक में बदलना, विश्वसनीयता हेतु जान देना)

बावर्ची (घर-परिवार में सबकी ख़ुशी में अपनी ख़ुशी ढूँढने की जीवन-कला)

गाइड (जनता के धार्मिक विश्वास को सही साबित करने के लिए आत्मबलिदान)

शिखर (बड़ा वह जो देने के लिए निकले)

सूर्यवंशम (बगैर गलती के पिता से निरंतर और बेहद अपमानित होने के बावजूद पिता का बेहद सम्मान)

साहिब बीबी और गुलाम (सबकी हँसी का पात्र बनने वाले को सम्मान देकर उसका सम्मान अर्जित करना)

सत्यकाम (उच्च आदर्शों के लिए निज-हितों का त्याग और कष्ट-सहन)

आनंद (मरते हुए आदमी द्वारा स्वयं खुश रहकर सबको खुश रखने की कला)

शराबी (मुंशी जी द्वारा नायक का भरोसा कमाकर उसकी बुराई छुड़वाना)

स्वदेस (अपनी मिट्टी की प्रबल पुकार को सुनना)

दो बीघा ज़मीन (शहरी चमक के पीछे छुपा अँधेरा)

दोस्ती (सच्चे दोस्त की मार्मिक कुर्बानी)

काबुलीवाला (अपनी जड़ों की मार्मिक याद और महत्ता)

मदर इंडिया (गैर की इज्ज़त की खातिर खुद्दार माँ द्वारा अपने अपराधी बेटे को मार डालना)

एक रुका हुआ फैसला (सबके बीच अकेले पड़कर, सबका विरोध झेलकर भी संयम रखना और अपने मत पर अडिग रहना, सबको अपने पक्ष में लाना 'एकला चलो रे')

फ़िल्मी गीत :-

* बच्चे मन के सच्चे
* चुनचुन करती आयी चिड़िया
* नन्हा-मुन्ना राही हूँ
* इंसाफ की डगर पे
* ये कौन चित्रकार है
* तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
* हिंदुस्तान की कसम, न झुकेगा...
* मत रो माता लाल तेरे बहुतेरे
* ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम
* कर चले हम फ़िदा
* आओ बच्चों तुम्हें दिखायें
* तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
* भारत की सीताओं के दुखड़े
* हे मर्यादापुरुषोत्तम तुमने मर्यादा क्यों..
* ओ पालनहारे....

आदर्श चरित्रों के animations/film videos/अपने भावपूर्ण शब्दों में वर्णन :-

* एकलव्य (गुरुभक्ति)
* पन्ना धाय (राष्ट्रहित हेतु पुत्रबलि)
* श्रवण कुमार (मातृ-पितृभक्ति)
* सत्यवादी हरिश्चन्द्र (सत्यनिष्ठा)
* महाराणा प्रताप (स्वाभिमान)
* दधीचि (परहित हेतु निज-बलिदान)
* भगीरथ (अदम्य प्रयास)
* अभिमन्यु (वीरता)
* ध्रुव (प्रभु-निष्ठा)
* भरत (आदर्श भाई)
* कर्ण (दानवीरता)
* युधिष्ठिर (सत्यवादिता)
* मीराबाई (भक्ति-वैराग्य)
* बुद्ध (आत्मसंयम सत्यशोध)
* हेलेन केलर (विषमता में जिजीविषा)
* विल्मा रुडोल्फ़ (विषमता में जिजीविषा)
* महात्मा गाँधी (सत्याग्रह)
* दशरथ मांझी (जुझारूपन)
* ......

उक्त उदाहरण केवल कुछ संकेत हैं, यदि सोच पसंद आये तो सुधी साथी अपने अनुसार परिवर्तित-संशोधित-संवर्धित करके इसे अमली जामा पहना सकते हैं।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

मिशन शिक्षण संवाद

ज्ञान-शिक्षा विषयक एक दृष्टान्त

किसी विद्वान ने कहा है कि, "सब कुछ भूल जाने के बाद भी जो याद रह जाये, वही शिक्षा है।"

इसी को हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि ज्ञान का अर्जन ऐसा है जैसे कोई ज्ञान-रेत की ऐसी बोरी लेकर पहाड़ पर चढ़ रहा है जिसमें 'कम ध्यान', 'लापरवाही', 'विस्मृति' जैसे अनेक छेद हैं और जब वह व्यक्ति पहाड़ की चोटी पर पहुंचता है, तब उसकी बोरी में जितनी रेत बचती है, वास्तव में वही उसकी उपलब्धि है।

पहाड़ के ढाल पर लुढ़कने का खतरा बना रहता है, temporary ज्ञान के भूलने का खतरा भी बरकरार रहता है, लेकिन एक बार पहाड़ पर पहुँच गये, तो गिरने का खतरा नहीं, एक निश्चित सीमा तक ज्ञान दोहराते रहे तो ज्ञान स्थाई हो गया।

(विचारक: प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

फ़िनलैंड की शिक्षा पद्धति

TV पर आ रहे एक कार्यक्रम में बतायी गयी 'फ़िनलैंड की शिक्षा-पद्धति' की कुछ विशेषताएं :

- बच्चों को पहले बचपन को जीना सिखाया जाता है।
- Competition की बजाय Cooperation और Coexistence की भावना पर जोर रहता है।
- Homework न के बराबर दिया जाता है ताकि बच्चे के द्वारा परिवार के साथ बिताया जाने वाला समय सुरक्षित रहे और वह पारिवारिक मूल्यों, सामाजिकता के पहलुओं को भी समझे।
- हर 45 मिनट के period के बाद 15 मिनट खेल हेतु दिये जाते हैं।

उक्त परिप्रेक्ष्य में हमारी शिक्षा प्रणाली की दु:खद विडंबना

* सर्वप्रथम तो समय से पहले पढ़ाना
* उस पर भारी-भरकम पाठ्यक्रम
* और फिर competition का बेतहाशा दबाव

संकट में है बचपन
संकट में मानवता

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

श्री सोनम वांगचुक के अनमोल अनुभव

(साथियों से अनुभव साझा करने के क्रम में)

लद्दाख के अत्यंत पिछड़े इलाके के engineer, educational reformer, उच्च-सोच वाले, उच्च-व्यक्तित्व के धनी श्री सोनम वांगचुक के विचारों की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैं (जैसा मैंने सुना और समझा) :-

- यदि आप सब कुछ सरकार के हिसाब से करते रहेंगे तो सीमित दायरे में ही सफल हो सकेंगे और सब कुछ ऐसे ही चलता/घिसटता रहेगा। आप कुछ ऐसा करिये जो इतना अच्छा परिणामोन्मुखी हो कि सरकार भी नीतियों में सुधार-परिवर्तन को सहर्ष तैयार हो जाए।

- श्री वांगचुक इस बात से बहुत खुश थे कि 9 वर्ष की अवस्था तक उन्हें स्कूल नहीं जाना पड़ा (भले ही मजबूरी में ही सही)। इस दौरान उनकी माँ ने मातृभाषा में उन्हें अनेक प्रकार की बातों से शिक्षित कर दिया था। उन्हें अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं का बोझा अपने नन्हें, कोमल कन्धों पर नहीं उठाना पड़ा। गौरतलब है कि उनकी माँ unschooled थीं (आधुनिक अधकचरी भाषा में कहें तो अशिक्षित थीं)। आज श्री वांगचुक को नौ भाषाएँ आती हैं।

- श्री वांगचुक के स्कूली नवाचार, कड़ी मेहनत और अद्भुत सोच से खड़े हिम-स्तूपों (कृत्रिम glaciers) से ऊसर को उर्वर बनाना, बालिकाओं हेतु ice-hockey के मैदान का प्रबंध, सीमित संसाधनों में जीने की सीख देने वाली माँ और उसके होनहार उत्तराधिकारी की यह कहानी बहुत कुछ सोचने-करने की प्रेरणा दे गयी।

- एक ख़ास बात, उक्त बातें श्री वांगचुक ने जिस सौम्यता, शांत-चित्तता और स्वाभिमानी विनम्रता से रखीं, उसने यह भी सिखाया कि बात का केवल सही होना ही अनेक बार काफी नहीं होता, लोगों पर प्रभावी असर डालने के लिए आपके व्यक्तित्व में विनम्रता (सुदृढ़ता के साथ) बहुत ज़रूरी है।

- एक आखिरी बात, 'फिल्म 3 इडियट्स में आमिर खान अभिनीत मुख्य किरदार फुन्सुख बांगड़ू इन्हीं के व्यक्तित्व से प्रेरित था'। हालाँकि खुद श्री वांगचुक ने इस तथ्य को महत्त्व नहीं दिया क्योंकि उनका मानना है कि कार्य के मूल्यांकन का पैमाना टीवी, फिल्म, मीडिया में प्रकाशन को नहीं मानना चाहिए।

(प्रस्तोता : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

[महत्त्वपूर्ण शिक्षा : बच्चों की सुरक्षा]

आज बच्चों से बाल-सुरक्षा संबंधी विस्तृत चर्चा की, जिसमें अनेक बच्चों ने अपने अनुभव भी साझा किये। बच्चों को जानकारी सहित उपाय बताकर मुख्यतः नैतिक रूप से प्रेरित किया गया।

*** कुछ उपयोगी बिन्दु ***

- अकेले सुनसान जगह पर जाने से बचें।
- यथासंभव, अजनबी से सुविधा न लें (लिफ्ट आदि)।
- अजनबी से खाने की चीज़ तो बिल्कुल न लें, भले ही वह प्रसाद कहकर दी जा रही हो।
- किसी के छूने पर अजीब सा लगे, विशेषकर होंठ, छाती, कमर के नीचे के हिस्से छुए जाने पर, तो वहाँ से निकलने की कोशिश करें।

- यदि वह पकड़ ही ले तो परिस्थिति-अनुसार निम्नांकित उपाय आजमा सकते हैं :-
    1. पूरी ताक़त से छूटने की कोशिश करें।
    2. जोर से चीखें।
    3. पीछे हाथ घुमाकर मुँह पर मुक्का मारें।
    4. नाखून गड़ाकर, दाँतों से काटने की कोशिश करें और भागें।

- उसकी हरकत को माता, पिता या घर के विश्वसनीय बड़ों को ज़रूर बताएँ।
- गलत हरकत करने वाले की किसी धमकी से डरें नहीं, खुलकर उसकी हरकत बड़ों को बताएँ। ऐसा करके आप :-
    1. अपने साहस का परिचय देंगे।
    2. बुरे आदमी की हिम्मत तोड़ेंगे।
    3. अन्य लोगों के लिए नज़ीर बनेंगे।
    4. अन्य बच्चों को संभावित हानि से बचाएँगे।

- किसी अन्य बच्चे के साथ ऐसा होता देखें तो भी मुखर हों। मदद भी होगी, पुण्य भी मिलेगा।
- बच्चों का हेल्पलाइन नंबर 1098

(चर्चाकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा० वि० डहिया, बरेली)

मिशन शिक्षण संवाद

【 दो बहु-उपयोगी जानकारियाँ 】

Facebook का video स्थाई रूप से download करने हेतु

1. इच्छित फेसबुक पोस्ट की मूल पोस्ट में '...' के अंदर जाकर copy link करें।
2. फिर fbdown.net पर जाकर वहाँ उस लिंक को paste करके download की औपचारिकता पूरी करें।

Youtube का video स्थाई रूप से download करने हेतु

1. snaptubeapp.com पर जाकर snaptube app download करें।
2. फिर youtube में इच्छित वीडियो चुनकर उसके 'share' option से snaptube में जाकर मनचाहे resolution में video या audio download करें।

(प्रयोगकर्ता/प्रस्तोता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

2 महत्त्वपूर्ण शोध

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

अमेरिका की National Training Laboratory (Bethel Maine) के इस Learning Pyramid से स्पष्ट है कि :

- केवल सुने हुए, पढ़े हुए या देखे हुए
  की अपेक्षा
- 'समूह चर्चा', 'अभ्यास करके' या 'दूसरों को पढ़ाने' जैसी गति-प्रधान क्रियाएँ कहीं अधिक प्रभावी हैं।

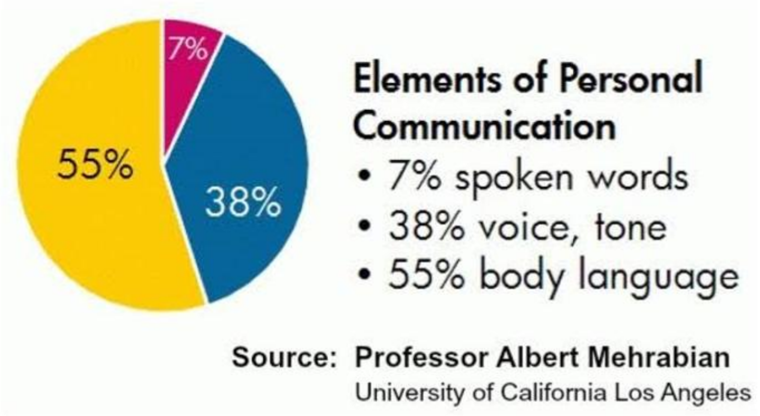

प्रोफेसर अल्बर्ट मेहराबियन के इस communication model के अनुसार जब हम अपनी बात कहते हैं तो :

- Verbal content का प्रभाव मात्र 7% होता है।
- Vocal factor का प्रभाव 38% होता है।
- Body language का प्रभाव 55% होता है, जिसमें हमारी मुद्रा, भावभंगिमा, eye-contact, clothing आदि शामिल हैं।

5 महत्त्वपूर्ण सूत्र

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

भाषा अधिगम के क्रमवार कौशल [सुबोपलि (LSRW)]

1. सुनना (Listening)
2. बोलना (Speaking)
3. पढ़ना (Reading)
4. लिखना (Writing)

गणित अधिगम के क्रमवार कौशल (ELPS)

1. Experience
   (भौतिक वस्तुओं के साथ अनुभव करे)
2. Language
   (अनुभव को बच्चा भाषा में बताये)
3. Picture
   (अनुभव को चित्र-रूप में समझे)
4. Symbol
   (उसका अंक प्रतीक जाने)

हर गतिविधि के 4 आवश्यक चरण (ERAC)

1. Experience अनुभव
2. Reflection चिंतन
3. Application अनुप्रयोग
4. Consolidation निष्कर्ष/समेटना

पर्यावरण संरक्षण का 4R सिद्धान्त (मुख्यतः प्लास्टिक के संदर्भ में)

1. Refuse (लेने से ही मना कर दें)
2. Reduce (प्रयोग में कमी लायें)
3. Reuse (प्रयुक्त का पुनः-उपयोग करें)
4. Recycle (उसे पुनर्निर्माण के चक्र में भेजें)

समालोचना की CDC technique (ताकि समालोचना सुग्राह्य बने)

- Connect (पहले सकारात्मक बिंदु उठाकर आलोच्य व्यक्ति की good books में आयें)
- Disconnect (फिर आलोचना के बिंदु को उठायें, थोड़ा तनाव का दौर)
- Connect (अंत पुनः सकारात्मक बिंदु से करें, ताकि आलोचक अपना हितैषी महसूस हो)

हिन्दी के अल्पज्ञात महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अनुनासिक : चंद्रबिंदु
- अनुस्वार : ऊपर वाली बिंदी
- रेफ : वर्ष, खर्च, शर्त आदि में लगा र
- पदेन : व्रत, ग्रह, क्रम आदि में लगा र
- शिरोरेखा : शब्द के ऊपर खींची गयी रेखा
- लाघव : शब्द संक्षेपीकरण में प्रयुक्त; जैसे डॉ॰ में
- श : तालव्य शकार, ष : मूर्धन्य षकार, स : दन्त्य सकार
- काकपद/हंसपद : छूटा शब्द ऊपर लिखने हेतु बनाया गया ^ चिह्न
- अवग्रह : संधि में लुप्त 'अ' के स्थान पर प्रयुक्त ऽ चिह्न, जैसे 'सोऽहम्' में
- (नुक्ता का महत्त्व) जलील अर्थात प्रतिष्ठित, ज़लील अर्थात अपमानित
- संस्कृत में ड अक्षर होता है, ड़ नहीं; जैसे संस्कृत में गरुड लिखेंगे, गरुड़ नहीं।

(संकलनकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

【क्या आप जानते हैं? 】

- Albhabet शब्द ग्रीक वर्णमाला के प्रथम दो वर्णों alpha और beta से बना है।
- i और j के ऊपर की बिंदी 'tittle' कहलाती है।
- 15 वर्णों वाला अकेला शब्द जिसमें कोई भी वर्ण दुबारा नहीं आता :
  (Uncopyrightable)
- 8 वर्ण वाला अकेला शब्द जिसमें केवल एक स्वर होता है :
  (Strength)
- केवल एक syllable वाला सबसे लंबा अंग्रेज़ी शब्द :
  (Scraunched)
- लगातार 5 स्वरों वाला अकेला शब्द :
  (Queueing)
- प्रतिगामी वर्णों वाला सबसे लंबा शब्द :
  (Spoonfeed)
- सबसे लंबा शब्द जो कीबोर्ड पर एक ही पंक्ति में टाइप होता है :
  (Typewriter)
- अकेला unhyphenated शब्द जिसमें लगातार तीन बार दोहरे शब्द आते हैं :
  (Bookkeeper या Bookkeeping)
- अंग्रेज़ी का सबसे लंबा शब्द (45 वर्ण) :
  (Pneumonoultramicroscopicsilicovolcanoconiosis) (फेफड़े की एक बीमारी)
- अंग्रेज़ी का सबसे छोटा पूर्ण वाक्य :
  (I am.)
- ऐसा वाक्य जिसमें अंग्रेज़ी के सभी 26 वर्ण समाहित हों, 'Pangram' कहलाता है। जैसे :
  (The quick brown fox jumps over the lazy dog.)
- ऐसा वाक्य, जिसमें 'ई' की ध्वनि वाली 7 भिन्न spellings हैं :
  (He believed Caesar could see people seizing the seas.)
- सबसे पुराना अंग्रेज़ी शब्द जो अभी भी चलन में है :
  (Town)
- वह शब्द जो 'टी' से शुरू, 'टी' पर खत्म और जिसके अंदर भी 'टी' :
  (Teapot)
- LISTEN (jumbled term) SILENT अर्थात (सुनो खामोश होकर)
- 'Goodbye' शब्द का मूल एक अंग्रेज़ी पद से लिया गया है, जिसका अर्थ है :
  (God be with you)

(संकलन : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

Indirect Abbreviations

(i.e.)
id est = that is

(viz)
videlicet = namely

(etc.)
et cetera = and other things

(e.g.)
exempli gratia = example given

(A.M.)
Ante Meridiem = before noon

(P.M.)
Post Meridiem = after noon

(A.D.)
Anno Domini = in the year of our Lord

(CV)
curriculum vitae = résumé = biodata

(Viva voce)
With living voice (in oral exam context)

(RIP)
Requiescat in Pace = Rest in Peace

(RSVP)
Répondez S'il Vous Plaît. = Respond if you please

(Presentation by : Prashant Agarwal, Bareilly)

संख्या-आधारित मुहावरे/वाक्यांश

चौबीसों घंटे
दो-चार होना
सठिया जाना
नहले पे दहला
एक से भले दो
आँखें चार होना
बत्तीसी दिखाना
तीन-पाँच करना
तीन-तेरह करना
दो-दो हाथ करना
निन्यानबे का फेर
पाँचों उँगली घी में
नौ दो ग्यारह होना
तीस मारखां बनना
छप्पन भोग लगाना
छत्तीस का आँकड़ा

थोड़ा इक्कीस होना
चार सौ बीसी करना
एक अनार सौ बीमार
सूरत पर बारह बजना
नौ दिन चले अढाई कोस
सातवें आसमान पर होना
छठी का दूध याद दिलाना
लंका में सब बावन गज के
उन्नीस बीस का अंतर होना
एक और एक ग्यारह बनना
नया नौ दिन पुराना सौ दिन
सौ सुनार की एक लुहार की
न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी
चार दिन की चाँदनी, फिर अंधेरी रात
नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली
(संकलक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

एक वर्ण का कमाल

(विचार-प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल ,बरेली)

.....ज्ञ (जानने वाला)

मर्मज्ञ (मर्म जानने वाला)
सर्वज्ञ (सब जानने वाला)
धर्मज्ञ (धर्म जानने वाला)
बहुज्ञ (बहुत जानने वाला)
नीतिज्ञ (नीति जानने वाला)
शास्त्रज्ञ (शास्त्र जानने वाला)
विशेषज्ञ (विशेष जानने वाला)

.....द (देने वाला)

हर्षद (हर्ष देने वाला)
सुखद (सुख देने वाला)
दुःखद (दुःख देने वाला)
जलद (जल देने वाला, बादल)
नीरद (नीर देने वाला, बादल)
पयोद (पय देने वाला, बादल)
वारिद (वारि देने वाला, बादल)
अम्बुद (अम्बु देने वाला,बादल)

.....धि (भंडार)

जलधि (जल का भंडार, सागर)
वारिधि (वारि का भंडार, सागर)
पयोधि (पय का भंडार, सागर)
अम्बुधि (अम्बु का भंडार, सागर)

.....ज (जन्मने वाला)

जलज (जल में जन्मने वाला, कमल)
नीरज (नीर में जन्मने वाला, कमल)
अम्बुज (अम्बु में जन्मने वाला, कमल)
सरोज (सरोवर में जन्मने वाला, कमल)
पंकज (पंक=कीचड़ में जन्मने वाला, कमल)
अग्रज (आगे=पहले जन्मने वाला, बड़ा भाई)
अनुज (अनु=पीछे जन्मने वाला, छोटा भाई)

.....क (करने वाला)

चालक (चालन करने वाला)
पालक (पालन करने वाला)
लेखक (लेखन करने वाला)
पाठक (पाठन करने वाला)
गायक (गायन करने वाला)
विचारक (विचार करने वाला)
सहायक (सहायता करने वाला)
लिपिक (लिपिकर्म करने वाला)
अनुवादक (अनुवाद करने वाला)
धावक (धावन=दौड़ना करने वाला)

.....प (पीने वाला)

मधुप (मधु पीने वाला, भौंरा)
पादप (पाद=पैरों से पीने वाला, पौधा)

●●●

मिशन प्रशान्त अग्रवाल, बरेली शिक्षा संवाद

अनुस्वार और पंचम वर्ण संबंधी नियम

(संयोजन-प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

नियम : अनुस्वार (नाक की ध्वनि) के बाद आने वाला वर्ण जिस वर्ग का होता है, उसी वर्ग के पंचमाक्षर का प्रयोग अनुस्वार (बिंदी) के बदले हो सकता है।

वर्ग नाम	वर्ग का पंचम वर्ण	वर्गानुसार अनुस्वार परिवर्तन में भेद			
		पहला वर्ण	दूसरा वर्ण	तीसरा वर्ण	चौथा वर्ण
क वर्ग	ङ	अहङ्कार (अहंकार)	शङ्ख (शंख)	गङ्गा (गंगा)	सङ्घ (संघ)
च वर्ग	ञ	कञ्चन (कंचन)	पञ्छी (पंछी)	कञ्ज (कंज)	मञ्झला (मंझला)
ट वर्ग	ण	घण्टा (घंटा)	गण्ठा (गंठा)	झण्डा (झंडा)	पण्ढरपुर (पंढरपुर)
त वर्ग	न	सन्त (संत)	पन्थ (पंथ)	बन्द (बंद)	गन्ध (गंध)
प वर्ग	म	कम्पन (कंपन)	कम्फर्ट (कंफर्ट)	कम्बल (कंबल)	शम्भु (शंभु)

नोट :

1. यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का व्यंजन आये तो पंचमाक्षर अनुस्वार में नहीं बदलेगा। जैसे :
   'सन्मार्ग' को संमार्ग नहीं लिख सकते क्योंकि न और म अलग वर्ग के हैं।
   'विन्यास' को विंयास नहीं लिख सकते क्योंकि न और य भी अलग वर्ग के हैं।

2. पंचम वर्ण यदि लगातार दो बार आये तो भी पंचमाक्षर अनुस्वार में नहीं बदलेगा। जैसे :
   चम्मच को चंमच नहीं लिख सकते क्योंकि पंचमाक्षर म लगातार दो बार आया है।
   कन्नड़ को कंनड़ नहीं लिख सकते क्योंकि पंचमाक्षर न लगातार दो बार आया है।

हिन्दी कहावतें = English proverbs

जिसकी लाठी उसकी भैंस	**Might is right**
ऊँट के मुंह में जीरा	**A drop in the Ocean**
थोथा चना बाजे घना	**An empty vessel sounds much**
आप भले तो जग भला	**Good mind, good find**
एक हाथ से ताली नहीं बजती	**It takes two to make a quarrel**
जो गरजते हैं वो बरसते नहीं	**Barking dogs seldom bite**
बोए पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय	**Gather thistles & expect pickles**
डूबते को तिनके का सहारा	**Drowning man catches at straw**
जैसा राजा वैसी प्रजा	**As the king so are the subjects**
मुख में राम बगल में छूरी	**A honey tongue, a heart of gall**
सांच को आंच क्या	**Pure gold does not fear the flame**
ऊंची दूकान फीके पकवान / नाम बड़े और दर्शन छोटे	**Great cry little wool**
चोर – चोर मौसेरे भाई / एक ही थैली के चट्टे-बट्टे	**Birds of same feather flock together**
कर बुरा तो होय बुरा / जैसी करनी वैसी भरनी	**Do evil & look for like**

【 20 Positive Proverbs 】

• Time is money.	समय धन है।
• Knowledge is power.	ज्ञान शक्ति है।
• No gain without pain.	बिना कष्ट के लाभ नहीं।
• Better late than never.	'कभी नहीं' से 'देरी' बेहतर।
• Practice makes perfect.	अभ्यास पूर्ण बनाता है।
• All's well that ends well.	अंत भला तो सब भला।
• Out of sight, out of mind.	नज़र से दूर, ध्यान से दूर।
• Honesty is the best policy.	ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।
• Fortune favours the brave.	भाग्य वीरों का साथ देता है।
• Laughter is the best medicine.	हँसना सर्वोत्तम औषधि है।
• Every cloud has a silver lining.	अंधेरे में आशा की किरण अवश्य।
• A rupee saved is a rupee earned.	रुपया बचाया मतलब रुपया कमाया।
• Actions speak louder than words.	कर्म शब्दों की अपेक्षा तेज बोलते हैं।
• Where there's a will, there's a way.	जहाँ चाह, वहाँ राह।
• The pen is mightier than the sword.	कलम तलवार से अधिक शक्तिशाली है।
• A picture is worth a thousand words.	एक चित्र हज़ार शब्दों के बराबर होता है।
• Necessity is the mother of invention.	आवश्यकता आविष्कार की जननी है।
• God helps those who help themselves.	ईश्वर उनकी सहायता करते हैं जो अपनी सहायता खुद करते हैं।
• Hope for the best, but prepare for the worst.	सर्वोत्तम की आशा रखो, लेकिन सबसे खराब के लिए तैयार रहो।
• A journey of a thousand miles begins with a single step.	एक हज़ार मील की यात्रा की शुरुआत एक अकेले कदम से होती है।

(Selected & presented by : Prashant Agarwal, Bareilly, UP)

स्थानीय इतिहास का संकलन हो

(एक महत्त्वपूर्ण सूचना देखकर आया एक विचार)

बेसिक विद्यालयों का नेटवर्क ही एकमात्र ऐसा नेटवर्क है जो हर गाँव में फैला है और जिसकी ड्राइविंग सीट पर बौद्धिक विद्वान हैं, और जिनके जिनके निरंतर संपर्क में स्थानीय सूचनाओं के सर्वोत्तम स्रोत (बच्चे और समुदाय) रहते हैं।

शिक्षण संवाद

तो क्यों न हर गाँव का स्थानीय इतिहास (नाम की व्युत्पत्ति, उपलब्धियां आदि) कुछ पन्नों में संगृहीत करने की कोई प्रदेशव्यापी योजना बने।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

22.2.2020

अहसासों का प्रेरणा-कुंज

इंसान एक भाव-प्रधान प्राणी है जिसके प्रत्येक क्रियाकलाप में उसके मूड/मनोवृत्ति की झलक अवश्य रहती है। और इसको सकारात्मक और ऊर्जावान बनाये रखने के लिए मेरे विचार से हर इंसान को जीवन में ऐसी डायरी/सूची अवश्य बनानी चाहिए जिसमें उसके विगत जीवन की सकारात्मक छटा हो,

जिसमें सम्मिलित हो सकती हैं प्रेरक/भाव-प्रधान :-

* घटनाएँ
* व्यक्ति
* चित्र
* पुस्तकें
* गीत
* कहानी/बोध कथाएँ
* Quotations
* अन्य पठित सामग्री
* संस्मरण
* यात्रा-अनुभव
* कौंधे हुए विचार
* दृश्य और उनसे जुड़ी अनुभूतियाँ
* ....
* ......

मिशन शिक्षण संवाद

और भले ही ऐसी डायरी सूत्र रूप में हो, उसका विशेष महत्त्व होता है उस व्यक्ति के लिए, जीवन-भर।

(अनेक साथी बनाते भी होंगे)

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

झकझोरने वाली विचार-तरंगें

- यदि आज मेरी ज़िंदगी का आखिरी दिन होता, तब भी क्या मैं वही करता, जो आज करने वाला हूँ? और यदि इसका जवाब लगातार कई दिनों तक 'नहीं' में हो, तो समझ लें कि मुझे कुछ बदलाव की आवश्यकता है।
  (स्टीव जॉब्स, 'एप्पल' के संस्थापक)

- आप कभी समुद्र पार नहीं कर सकते, यदि आपमें किनारे को ओझल होते देखने का साहस नहीं है। (कोलम्बस)

- चट्टान और धारा के संघर्ष में जीत हमेशा धारा की होती है; शक्ति के कारण नहीं, निरंतरता के कारण। (एच. जैक्सन ब्राउन)

- यदि हम प्राप्त भुगतान से ज़्यादा का काम करते हैं, तो अंततोगत्वा हमें उससे भी ज़्यादा भुगतान मिलेगा, जितना हमने काम किया होगा। (ज़िग ज़िगलर)

- चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, दयालुता का कोई भी कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। (ईसप)

- इस दुनिया में सर्वोत्तम और सर्वाधिक सुन्दर चीजें न देखी जा सकती हैं और न ही सुनी जा सकती हैं, बस दिल से महसूस की जा सकती हैं। (हेलेन केलर)

- जो कुछ भी मेरे साथ घटित हो सकता है, मैं उससे बड़ा हूँ क्योंकि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। (ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)

- सुन्दर तस्वीरों को डार्क रूम में **negatives** से तैयार किया जाता है, इसलिए जब कभी आप अपनी ज़िंदगी में अँधेरा देखें तो इसका अर्थ है कि भगवान् आपके सुन्दर भविष्य के लिए कुछ गढ़ रहे हैं।

- जितनी अँधेरी रात, उतने चमकते सितारे।
  जितना गहरा दुःख, उतने निकट भगवान्। (दॉस्तोएव्स्की)

(संकलनकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

Useful Full Forms

(Educational, Technical & related)

CL Casual Leave
EL Earned Leave
MDM Mid Day Meal
CCL Child Care Leave
LO Learning Outcome
TC Transfer Certificate
GO Government Order
LPC Last Pay Certificate
PBBB पढ़े भारत बढ़े भारत
DA Dearness Allowance
LWP Leave Without Pay
RTE Right To Education
IQ Intelligence Quotient
EGR Early Grade Reading
DCF Data Capture Format
TET Teacher Eligibility Test
SSA Sarv Shiksha Abhiyaan
CCA Co-curricular Activities
PRE Print Rich Environment
GPF General Provident Fund
NOC No Objection Certificate
SAT Student Assessment Test
NPS National Pension System
PTM Parents Teacher Meeting
QR code Quick Response code
BALA Building As Learning Aid
TLM Teaching Learning Material
CWSN Child With Special Needs
4R Refuse Reduce Reuse Recycle
GLP Graded Learning Programme
VEC Village Education Committee
NGO Non-Government Organization
SMC School Management Committee
NCF National Curriculum Framework
D.El.Ed. Diploma in Elementary Education
LSRW Listening Speaking Reading Writing
ELPS Experience Language Picture Symbol
DPEP District Primary Education Programme
CCE Continuous & Comprehensive Evaluation
SHARDA स्कूल हर दिन आयें (School HAR Din Aayen)
ICT Information & Communication Technology
ERAC Experience Reflection Application Consolidation

SPD State Project Director
AD (Basic) Assistant Director
BSA Basic Shiksha Adhikari
DC District Coordinator
BEO Block Education Officer
NRG National Resource Group
SRG State Resource Group
KRP Key Resource Person
ARP Academic Resource Person
BRC Block Resource Centre
CRC Cluster Resource Centre (NPRC)
DIET District Institute for Education & Training
SIE State Institute of Education

WiFi Wireless Fidelity
CUG Closed User Group
USB Universal Serial Bus
FM Frequency Modulation
SIM Subscriber Identity Module
OMR Optical Mark Recognition
PPt Power Point (Presentation)
PDF Portable Document Format
GIF Graphics Interchange Format
NIC The National Informatics Centre
KYC Know your Customer
HRA House Rent Allowance
CIF Customer Information File
ATM Automatic Teller Machine
EMI Equated Monthly Installment
PAN Permanent Account Number
RTGS Real Time Gross Settlement
IFSC Indian Financial System Code
NEFT National Electronic Funds Transfer
IVRS Interactive Voice Response System
MICR Magnetic Ink Character Recognition
PRAN Permanent Retirement Account Number

BLO Booth Level Officer
PO Presiding Officer, Polling Officer
ODF Open Defecation Free
ANM Auxiliary Nurse Midwife
ASHA Accredited Social Health Activist

UDISE Unified District Information System for Education
SCERT State Council of Educational Research and Training
eHRMS The electronic Human Resource Management System
SIEMAT State Institute of Educational Management and Training
DIKSHA Digital Infrastructure for Knowledge Sharing (not official)
NUEPA National University of Educational Planning and Administration
PRERNA Program for Result Enhancement Resource Nurturing and Assessment
NISHTHA National Initiative for School Heads and Teachers Holistic Advancement
CAPTCHA Completely Automated Public Turing test to tell Computers and Humans Apart

(Compiled by)
Prashant Agarwal
Bareilly

प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

आधारशिला

फाउंडेशन लर्निंग शिविर

(50 दिवसीय साप्ताहिक योजना)

(कक्षा 1-2)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

सप्ताह	भाषा लक्ष्य	गणित लक्ष्य
1	• सुनकर अनुक्रिया देना • चित्र देखकर एक शब्दीय उत्तर देना • पुस्तक सही से पकड़ना	• संख्यापूर्व अवधारणाएं
2	• सुनकर सरल निर्देशों का पालन • चित्र-आधारित सरल प्रश्नों के उत्तर • लेखनपूर्व क्रियाएं • पुस्तक खोलने के तरीके	• 1-9 की समझ व उपयोग
3	• सुनी कविता/कहानी पर सरल प्रश्नोत्तर • वर्णों की पहचान • बालू पर पैटर्न बनाना • हवा में लिखना	• शून्य की समझ
4	• सूची प्रश्नों के मौखिक उत्तर • सरल कविता/कहानियाँ सुनाना • वर्णों की पहचान • मात्राओं की पहचान • कुछ वर्ण लिखना	• 1-50 में इकाई-दहाई की समझ
5	• तर्क (क्यों/कैसे) वाले प्रश्नों के उत्तर • कविता/कहानियाँ सुनाना • दो वर्णीय अमात्रिक शब्द पढ़ना • कुछ वर्ण लिखना	• 1-99 की समझ व उपयोग • दो अंकीय संख्याओं में बढ़ते-घटते क्रम की समझ
6	• कल्पना (यदि) वाले प्रश्नों के उत्तर • सरल प्रश्नों के उत्तर • अमात्रिक शब्द पढ़ना • सभी वर्ण लिखना	• एक अंकीय जोड़ • एक अंकीय घटाना
7	• कविता/कहानियाँ सुनाना • उचित भाषा का प्रयोग • स्तरानुसार शब्द/वाक्य पढ़ना • मात्रात्मक शब्द बनाकर लिखना	• 100-999 की समझ • दो-तीन अंकीय सरल जोड़ • दो-तीन अंकीय सरल घटाना

प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

शिक्षण-संग्रह (पृष्ठ 68-89) का सार
"व्यक्तित्व विकास की कार्ययोजना"

1. प्रातःकालीन सभा :

- अवधि लगभग 30 मिनट हो। प्रतिदिन अलग प्रार्थना जो हर माह बदल जाये।
- प्रेरक-प्रसंग, समाचार, स्वास्थ्य-चर्चा, GK, सामान्य निर्देश, विशेष प्रयासों पर प्रोत्साहन, योग, PT, राष्ट्रगान हो। (सामग्री-संकलन स्वयं व बच्चों द्वारा करायें)

2. सांध्यकालीन सभा :

- अवधि 30 मिनट। प्रतिदिन भिन्न समूहगान, सामूहिक व्यायाम, कविता, कहानी, गीत, साप्ताहिक Quiz.
- शनिवार को बालसभा, कार्यानुभव, चित्रकला, TLM निर्माण, रंगोली, मुखौटा, सुलेख/श्रुतलेख प्रतियोगिता।

3. सह-शैक्षिक गतिविधियाँ :

- कहानी, निबंध, वाद-विवाद, अंत्याक्षरी, पोस्टर, रंगोली, खेलकूद, रोलप्ले, लोककथा, लोकगीत, चित्रांकन की प्रतियोगिताएं हों।
- संगोष्ठी, कार्यशालाएँ, विज्ञान-गणित क्लब, दिवस-पर्व आयोजन, कार्यानुभव, शिल्पकार्य, परिवेशीय संग्रहालय, पुस्तकालय, भ्रमण द्वारा CCA समृद्ध हों।
- इनके नियोजन, आयोजन, प्रबंधन में समय, संसाधनों और बाधाओं पर विचार हो। अनावश्यक औपचारिकताओं से बचा जाये। बालिकाओं, दिव्यांगों की सहभागिता सुनिश्चित हो।

4. खेल गतिविधियां/प्रतियोगिताएं :

- प्रातःकालीन सभा में योग, PT हो। सांध्यकालीन सभा में एथलेटिक्स हो। शनिवार को खेल विशेषतः हों।

5. जीवन-कौशल विकास :

- Critical thinking, Decision making, Problem solving, Effective communication, Stress control, Empathy आदि हेतु बच्चों से चर्चा, अनुभव सुनना, प्रेरक-प्रसंग, रोलप्ले, अखबारी समाचार, Audio-video द्वारा प्रेरक ज्ञान देना।

6. व्यक्तिगत स्वच्छता :

- दाँत, बाल, नाखून, वस्त्र-स्वच्छता, हस्त-प्रक्षालन, रूमाल संबंधी आदतों का विकास, नारे लगवाना, प्रोत्साहित करना।

7. व्यावसायिक परामर्श :

- बच्चों के सपने डायरी में नोट करना, फिर समय-समय पर किसी एक की विस्तृत चर्चा करना, उस सपने की योग्यताओं, संभावनाओं, बाधाओं, समाधानों, मददगार स्रोतों, आदर्शों पर चर्चा करना।
- उस क्षेत्र से संबंधित लोगों को विद्यालय में बुलाकर बच्चों को सुनवाना।
- उस क्षेत्र के सफल लोगों की कहानियाँ सुनाना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों की जानकारी, भ्रमण कराना।

8. बाल संसद :

- प्रधानमंत्री, शिक्षा मंत्री, स्वास्थ्य-स्वच्छता मंत्री, जल एवं कृषि मंत्री, पुस्तकालय-विज्ञान मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री बनाकर बच्चों को जिम्मेदारी वितरण। (सार-संकलन : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

•••

प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

शिक्षण योजना

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	4	हिन्दी	40 मिनट

1. अधिगम परिणाम : बच्चे नाटक के पात्रों के रूप में अभिनय करते हैं और छोटे-छोटे संवाद उचित भाव-भंगिमा से बोलते हैं।

2. प्रकरण : बच्चों का पूछताछ केंद्र

3. सीखने-सिखाने की सामग्री : पाठ्यपुस्तक, एक डेस्क-बेंच

4. सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ :

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
(क)	(शिक्षण की शुरुआत में) पहले तो बच्चों को पाठ की भावना से परिचित कराने के लिए अभिनय के साथ कुछ चुटीले काल्पनिक संवाद सुनायेंगे। जैसे : * बच्चों, एक बार मैंने राकेश से पूछा, "कल स्कूल क्यों नहीं आये थे?" तो राकेश बोला, "सरजी, कल रास्ता खो गया था।" * एक दिन मैंने मधुबाला से पूछा, "तुमने 12 का पहाड़ा अभी तक याद क्यों नहीं किया?" तो मधुबाला बोली, "सरजी, यह पहाड़ा तो पहाड़ जैसा भारी है, उठ ही नहीं रहा है।"	5 मिनट	अवलोकन
(ख)	(शिक्षण के दौरान) बच्चों, आज हम ऐसी ही एक बच्ची चीची के बारे में जानेंगे जो सबके प्रश्नों के बहुत रोचक जवाब देती है। बाद में आपको इस पर एक्टिंग भी करनी है, इसलिए ध्यान से सुनना। फिर बच्चों को पात्र के रूप में सम्मिलित करते हुए (हालांकि उनकी ओर से संवाद स्वयं बोलते हुए) पाठ पर पूरे हाव-भाव, आरोह-अवरोह से अभिनय करेंगे। प्रशान्त अग्रवाल, बरेली	10 मि.	अवलोकन
(ग)	(शिक्षण के बाद में) (नाटक-मंचन) फिर बच्चों से उनकी इच्छित भूमिकाएं पूछकर अभिनय करवाया जाता है। 5 मिनट अपने-अपने चरित्र-संवाद को समझने हेतु भी दिये जाते हैं। साथ ही, अभिनय संबंधी कुछ सूत्रों को समझाया भी जाता है (जैसे हँसी और झिझक अभिनय के दो सबसे बड़े शत्रु हैं।) बाद में शेष बच्चों से श्रेष्ठतम अभिनेता, अभिनय में गलतियों के बारे में प्रश्नोत्तरी भी की जाती है।	25 मि.	अवलोकन प्रस्तुतीकरण प्रश्नोत्तरी

5. प्रदत्त गृहकार्य :

कल सभी विद्यार्थी एक-एक रोचक प्रश्नोत्तर बनाकर लाएंगे और अपने प्रश्नोत्तर पर ही अभिनय करके दिखाएंगे।

6. शिक्षक की आगामी योजना :

(क) नाटक को अन्य बच्चों द्वारा अभिनीत कराकर पुरानी गलतियों के सुधार, नये बच्चों को बेहतर करने का अवसर और पाठ को अधिकाधिक हृदयंगम कराने जैसे लाभ प्राप्त किये जायेंगे।

(ख) बच्चों को कल्पनात्मक प्रश्नोत्तरों के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा।

(ग) पाठ संबंधी लेखन-कार्य कराया जायेगा। (शिक्षण-योजना-निर्माता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

शिक्षण योजना

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	4	हिन्दी	40 मिनट

1. अधिगम परिणाम : बच्चे कहानी को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति-प्रवाह के साथ सुनाते व पढ़ते हैं ।
2. प्रकरण : हौसला
3. सीखने-सिखाने की सामग्री : पाठ्यपुस्तक, कुर्सी (व्हीलचेयर हेतु)
4. सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ :

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
(क)	(शिक्षण की शुरुआत में) सबसे पहले हौसले के अर्थ-महत्त्व पर बच्चों से थोड़ा संवाद/प्रश्नोत्तर करेंगे। जैसे : "घर में बैठे हुए एक सुई चुभने पर भी दर्द होता है, लेकिन लड़ाई के मैदान में दसियों घाव खाने के बाद भी सैनिक लड़ता है, कैसे?" "हौसले की वजह से"....	5 मिनट	अवलोकन प्रतिक्रिया
(ख)	(शिक्षण के दौरान) हौसले की पृष्ठभूमि बनाने के बाद बच्चों को सम्पूर्ण कहानी भरपूर हाव-भाव, मुख-मुद्रा, उतार-चढ़ाव, यथोचित pause लेते हुए सुनायेंगे, महसूस करायेंगे। (इस निर्देश के साथ कि तुम सबको बाद में बताना है कि कहानी का कौन सा हिस्सा तुम्हें सबसे अच्छा लगा और फिर उसी हिस्से को खूब अच्छे हाव-भाव के साथ सुनाना भी होगा, पुस्तक की सहायता भी ले सकते हो।) कहानी सुनाने के दौरान बच्चों से संवाद/प्रश्नोत्तरी स्थापन द्वारा उनको कहानी सुनने के प्रति सजग बनाये रखेंगे। (जैसे : अमुक स्थिति में तुम क्या करते?, यातायात के नियम संबंधी प्रश्नोत्तरी आदि) प्रशान्त अग्रवाल, बरेली	15 मि.	अवलोकन प्रतिक्रिया प्रश्नोत्तरी
(ग)	(शिक्षण के बाद में) अब बच्चों से उनका पसंदीदा अंश बताने और उसे अपने शब्दों में पूरे भावपूर्ण ढंग से सुनाने को कहा जाता है, इस प्रतिस्पर्धात्मक प्रेरक निर्देश के साथ कि देखें कौन सबसे बढ़िया तरह से सुनाता है।	15 मि.	अवलोकन प्रस्तुतीकरण

5. प्रदत्त गृहकार्य : (गृहकार्य आवंटन में भी 5 मिनट अपेक्षित)

पूरी कहानी को छोटे-छोटे अंशों में बाँटकर अधिकाधिक इच्छुक विद्यार्थियों को एक-एक अंश देकर उसे अगले दिन कक्षा में सुनाने का कार्य दिया जाता है।

6. शिक्षक की आगामी योजना :

(क) बच्चों को आवंटित अंश उनसे सुने जायेंगे और प्रोत्साहनपूर्ण शब्दों द्वारा उन्हें और बेहतर सुनाने को प्रेरित किया जायेगा।
(ख) बच्चों को पूरी कहानी सुनाने का अवसर भी दिया जायेगा।
(ग) कहानी को modify करने, यातायात संबंधी नियमों, मुहावरों, संवेदनशीलता आदि बिंदुओं पर भी कार्य किया जायेगा।

(शिक्षण-योजना-निर्माता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)